अध्ययन सामग्री

बी॰ ए॰ (संस्कृत) पार्ट 2

प्रश्नपत्र - तृतीय

डॉ॰ मालविका तिवारी
सहायक प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
एच॰ डी॰ जैन कॉलेज
बी॰ कुं॰ सिं॰ वि॰, आरा

22.07.21

दशकुमारचरितम्

दण्डी की गद्यशैली

संस्कृत-काव्य-संसार में शब्दों का कलात्मक कसीदा काढ़ने में जितना कृतकार्य शब्द-शिल्पी कविवर दण्डी हुए उतना शायद ही कोई दूसरा कवि हुआ हो। दण्डी शब्द-संसार के सम्राट् थे।

दण्डी की गद्यशैली अत्यन्त सरल, सुबोध एवं भाषा की प्रवाहमयता से युक्त है। इनके गद्य की भाषा सामान्य जन-जीवन के अधिक निकट है। इनकी भाषा अलङ्कारों के आडम्बर से रहित प्रवाहपूर्ण, मंजी हुई एवं मुहावरेदार है। इनका गद्य न तो सुबन्धु के गद्य के समान श्लेषमण्डित है और न ही बाण के समान गाढबन्धता से युक्त है। छोटे-छोटे समासों तथा सरल पद-विन्यास से युक्त दण्डी के वाक्य अत्यन्त पुष्ट और सहृदयों का हृदयावर्जन करने वाले हैं। परम्परा के अन्य गद्यकारों से परे दण्डी अपने नवीन मार्ग के उद्भावक हैं। इनका यह मार्ग गद्यशैली का अत्यन्त सुकुमार मार्ग है। अर्थ की स्पष्टता, सुन्दर रसाभिव्यक्ति, ललित पदों की आयोजना तथा भाषा का दैनन्दिन प्रयोगों के निकट होना आदि इनके इस नवीन मार्ग की विशेषताएँ हैं। इनके गद्य में पदों की आयोजना इतनी ललित एवं मनोरम है कि पण्डित वर्ग ने 'दण्डिनः पदलालित्यम्' कहकर इसकी सराहना की है।

संक्षेप में संस्कृत साहित्यशास्त्रियों में रीति (शैली) को ही किसी भी रचना का प्रमुख तत्त्व मानने वाले महाकवि दण्डी अपनी इस गद्यकृति में उस 'विशिष्ट पद रचना' का सुष्ठु निदर्शन भी करते हैं। कीथ महोदय उन्मुक्त कण्ठ से दण्डी की गद्यशैली और भाषा की सराहना करते हुए कहते हैं- 'दण्डी को निस्सन्देह अपनी भाषा के प्रयोग में आचार्यत्व प्राप्त है। वे आख्यान का सरल एवं सुबोध वर्णन करने में सर्वथा समर्थ हैं और अपने पात्रों द्वारा कहलाए जाने वाले भाषणों में वे भाषा की जटिलता एवं विस्तार के दोष को सावधानी के साथ दूर रखते हैं परन्तु वर्णनों में वे अपनी प्रतिभा तथा भाषा पर अपना अधिकार प्रदर्शित करने के लिए उद्यत रहते हैं। एक पारम्परिक मूल्यांकन के अनुसार वे पदलालित्य में सबसे आगे बढ़ जाते हैं। अभिव्यक्ति की यथार्थता एवं अर्थ की स्पष्टता पर भी उनका ध्यान गया है और कर्णकटु ध्वनियों एवं शब्दाडम्बर से भी अपने को बचाते हैं। उनके ग्रन्थ में सौन्दर्य, ध्वनि का सामञ्जस्य और रस की प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति है। उन्होंने प्रकृति का भी मनोरम चित्र अंकित किया है और सूर्योदय तथा सूर्यास्त का बड़ा ही रमणीय चित्र चित्रित किया है। अभिव्यञ्जना शैली के निर्वाह में संतुलन उपस्थित कर दण्डी ने संस्कृत गद्यकाव्य में नवीन पद्धति प्रारम्भ की है। शाब्दी-क्रीडा अथवा आर्थी क्रीडा की ओर कभी-कभी उनका मन अवश्य जाता है, पर इससे अर्थ प्रतीति में किसी प्रकार का व्यवधान उपस्थित नहीं होता।

चरित्र-चित्रण दण्डी की निजी विशेषता है। उन्होंने अपनी कृति में हास्य एवं व्यंग्य का पुट देकर उसे और भी अधिक आकर्षक बनाया है। संपूर्ण

ग्रन्थ में दण्डी ने राजकुमारों के विचित्र अनुभव का बड़ा ही हास्यात्मक वर्णन प्रस्तुत किया है। कुल मिलाकर दण्डी विषय-चयन, अभिव्यञ्जना-कौशल तथा शैलीगत दोष की क्षति के दोष से रहित हैं। संयम तथा अनुपात का उन्होंने सर्वत्र ध्यान रखा है और असंयत समासान्त पदावली निरर्थक वाक्याडम्बर जटिल श्लेष योजना तथा दूरारूढ़ कल्पना से अपने को मुक्त रखा है। पर दण्डी की शैली को अनलंकृत भी नहीं कहा जा सकता। इतना अवश्य है कि उन्होंने संक्षिप्त, सूक्ष्म तथा संयमपूर्ण वर्णन शैली के द्वारा अपनी रचना में प्रभावोत्पादकता को अक्षुण्ण रखा है। पंचम उच्छ्वास में राजकुमारी अवन्ति-सुन्दरी का सौन्दर्य-वर्णन उनकी कला के वैशिष्ट्य का द्योतक है —

"या वसन्तसहायेन समुत्सुकतया रतेः केलीशालभञ्जिका-विधित्सया नारीविशेषं विरच्यात्मनः क्रीडाकासारशारदारविन्द-सौन्दर्येण पादद्वयम्, उद्यानवनदीर्घिकामत्तमरालिकागमनरीत्या लीलालसगतिविलासम्, तूणीरलावण्येन जङ्घे, लीलामन्दिरद्वार-कदलीलालित्येन मनोज्ञमूरुयुगम्, जैत्ररथचातुर्येण घनं जघ-नम् ——— समस्तमकरन्दकस्तूरिकासम्मिलनेन मलयजसेन प्रक्षाल्य कर्पूरपरागेण सम्मृज्य निर्मितेव रराज।"

दण्डी राजमार्ग, राजप्रासाद, श्मशान, निर्जन महारथी के वर्णन में भी अपनी दक्षता प्रदर्शित करते हैं। वे सशक्त स्फीत संस्कृत शैली के अधिराज हैं।

दण्डी तीनों प्रकार के गद्यरूप प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त हैं। 'दशकुमारचरित' से इन तीनों के उदाहरण क्रमशः प्रस्तुत हैं —

कोमलवर्ण और अल्पसमासयुक्त चूर्णक —

'लावण्योपमितपुष्पसायक! भूनायक!! भवानेव आविन्यपि जन्मनि वल्लभो भवत।'

ध्वन्योमय लयात्मकता से कमनीय वृत्तगन्धि का उदाहरण —

'अनतिवलतितनुतरोदम् _____ आननेन्दुसम्मुखवालकलतं च विस्रब्धप्रसुप्तामतिधवलोत्तरच्छदनिमग्नप्रायैकपार्श्वतया चिर-विलसनवेदनिश्चलां, शरदाम्भोधरोत्सङ्गशायिनीमिव सौदामिनीं राजकन्यामपश्यम् ।

यहाँ 'अनतिवलतितनुरोदम्' और 'शरदाम्भोधरोत्सङ्गशायिनीमिव' पदों में वृत्तजन्य यति-गति का समन्वय द्रष्टव्य है। इसी प्रकार कठोर वर्णों और समासबाहुल्य से युक्त गद्य प्रस्तुत करने में दण्डी ने अपनी साहित्यिक चित्रवृत्ति दिखायी है —

'तत्र वीरभटपटलोत्तरङ्गतुरङ्गकुञ्जरमकरभीषण सकलरिपुगणकट-कजलनिधिमथनमन्दरायमाणसमुद्दण्डभुजदण्डः, पुरन्दरपुराङ्गणवन-विहरणपरायणतरुणगणिकागणजेगीयमानयातिमानया _____ कीर्त्याऽभितः सुरभितः।'

दण्डी समासबहुल गद्य को अत्यधिक महत्त्व देते हैं। उनकी दृष्टि में वह गद्य का प्राणतत्त्व है —

'ओजः समास भूयस्त्वमेतद्गद्यस्य जीवितम्'।

दण्डी को प्रायः वैदर्भी शैली का कवि माना जाता है, किन्तु वास्तविक रूप में वे 'वैदर्भीबहुला गौड़ी' के कवि हैं। उन्होंने यद्यपि अपने 'काव्यादर्श' में बड़ी ही निपुणता से गौड़ी रीति से, वैदर्भी रीति का सूक्ष्म अन्तर प्रदर्शित किया है, किन्तु उनका आकर्षण अवसर पाते ही गौड़ी की ओर हो जाता है। 'दशकुमारचरित' का विस्तृत पटल शृङ्गार और वीर दोनों ही भावों से आपूर्ण है। शृङ्गारप्रधान भावों की अभिव्यञ्जना के लिए उन्होंने असमस्त और माधुर्याभिव्यञ्जक भाषा का प्रयोग किया है और शौर्यभाव की अभिव्यक्ति के लिए कवि ने ओजोमयी समस्त पदावली का प्रयोग किया है। दण्डी की अधिकांश पदावली ऐसी है, जिसमें वर्ण माधुर्यव्यञ्जक है किन्तु वर्ण या पदसंघटना समस्त है। उसे शुद्ध रूप से न तो वैदर्भी ही कहा जा सकता है और न गौड़ी ही। उदाहरणस्वरूप —

"तत्र तत्र मलयमारुतान्दोलितशाखानिरन्तरसमुद्भिन्नकुसुमफलसमुल्लसितेषु रसालतरुषु कोकिलकीरालिकुलमधुकराणामालापश्रावं श्रावं, _____ _____ सरांसि दर्शंदर्शमनन्दलीलया ललनासमीपमवाप ।"

आचार्यों ने इसे लाटी नाम दिया है किन्तु यह साहित्यशास्त्रीय मान्यता की कठोर प्राचीर में आबद्ध नहीं हो पाता। दण्डी के विषय में केवल यही कहा जा सकता है कि उन्होंने विभिन्न रीतियों के सम्मिश्रण से एक नई रीति उत्पन्न की है और उसे 'दण्डी रीति' कहा जा सकता है ।

दण्डी की गद्यशैली की कमनीयता के विषय में प्रो० कृष्ण चैतन्य की यह अवधारणा अवलोकनीय है —
The style is sensitive and can capture the beauty of dawn and dusk of spring of women in play and repose, Dandi can not restrain himself from showing of his technical brilliance.

सारांश रूप में सुन्दर कौतुकपूर्ण कथानकों के सृजन एवं सुभग तथा सुबोध संस्कृत गद्य के लेखन की दृष्टि से संस्कृत गद्य के क्षेत्र में दण्डी संस्कृत साहित्य के अन्य गद्यकों के बीच अद्वितीय हैं ।